~~वैदिक संस्कृति~~

मुगल साम्राज्य

Lecture given by -

Mamta Rani

Guest Assistant Professor

Deptt. of History.

SNSRKS College, Saharsa,

Bihar.

औरंगजेब

औरंगजेब की धार्मिक नीति

क्या औरंगजेब एक रूढ़िवादी सुन्नी मुसलमान था? अपने दृष्टिकोण में वह अकबर तथा जहाँगीर की तुलना में निश्चय ही रूढिवादी था, वह पाँचों वक्त का नमाजी था तथा अपने निजी जीवन में वह धार्मिक औपचारिकताओं का पालन करता।

क्या उसकी धार्मिक नीति उसके निजी रूढिवादी सुन्नी दृष्टिकोण से प्रेरित थी? हालांकि किसी भी शासक या प्रशासक के नीति निर्धारण को निजी दृष्टिकोण के प्रभाव से बचाना व्यवहारिक रूप में संभव नहीं होता अतः औरंगजेब की नीति पर भी निजी आस्था का प्रभाव संभव है। परन्तु, हमें यह ध्यान देना चाहिए कि औरंगजेब एक प्रशासक था उलेमा नहीं। अतः उसकी धार्मिक नीति उसके निजी विश्वास से अधिक उसकी प्रशासनिक बाध्यता से परिचालित रही थी। यदि हम उसके संपूर्ण कार्यकाल में धार्मिक नीति का विश्लेषण करते हैं तो यह बात स्पष्ट हो जाती है, प्रथम उसके शासन का प्रारंभिक चरण एक तरह से अगर देखा जाए तो उसकी रूढिवादी धार्मिक नीति का आधार निर्मित करने में उत्तराधिकार के युद्ध का महत्वपूर्ण योगदान रहा था। इस संघर्ष में उसने इस्लाम बनाम विधर्मी का नारा दिया ताकि

तौर पर जहाँगीर के साथ अच्छे ताल्लुकात बनाये रखा।
बताया जाता है कि जहाँगीर ने शाह के दरबार
में प्रमुख चित्रकार विसनदास को भेजा था और
विसनदास ने शाह तथा उसके प्रमुख अमीरों का
चित्र उतार कर लाया था। फिर जहाँगीर के चित्रकारों
ने ऐसा चित्र भी बनाया था जिसमें जहाँगीर तथा
ईरान के शाह शाहअब्बास प्रथम एक दूसरे के गलबाही
डाले खड़े हैं जबकि उनके पैरों के नीचे ग्लोब
है। किन्तु उधर शाह अब्बास प्रथम ने चुपके-2
कान्धार पर कब्जा करने की तैयारी कर रहा था
और फिर 1622 में उसने अचानक कन्धार पर कब्जा
कर लिया। जहाँगीर उसके लिए तैयार नहीं था
तभी जहाँगीर ने अपने सबसे योग्य पुत्र शाहजहाँ
को कंधार अभियान पर जाने का आदेश दिया
किन्तु बदले में शाहजहाँ ने जहाँगीर के समक्ष
के समक्ष कुछ शर्तें रख दी अतः जहाँगीर क्रुद्ध हो
गया और शाहजहाँ को दण्डित करना चाहा किन्तु
तभी शाहजहाँ ने विद्रोह कर दिया हालांकि फिर
एक बार पिता-पुत्र में मिलाप हुआ किन्तु तब तक
कान्धार हाथ से निकल चुका था।

शाहजहाँ (1628-58)

- जुझार सिंह का विद्रोह (1628-34)

शाहजहाँ द्वारा जुझार सिंह बुंदेला का उग्र दमन
किया गया।

प्र० दीन-ए-इलाही अकबर की मुर्खता का स्मारक थी. इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उ० अकबर की दीन-ए-इलाही पर एक ब्रिटिश विद्वान स्मिथ का यह कथन पूर्वाग्रहपूर्ण इतिहास लेखन को निर्देशित करता है जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।

वस्तुतः स्मिथ के लेखन का आधार ही त्रुटिपूर्ण है प्रथम, उसके लेखन पर बदायुनि एवं समकालीन इसाई लेखकों का प्रभाव है जबकि ये अकबर विरोधी दृष्टि रखते है। इतना ही नहीं स्वयं स्मिथ भी अकबर विरोधी ब्रिटिश इतिहास लेखन का शिकार है। इसके अतिरिक्त स्मिथ ने दीन-ए-इलाही का मूल्यांकन उसके उद्देश्य के आधार पर न करके उसके अनुयायीयों की वास्तविक संख्या के आधार पर करने का प्रयास किया है।

यह सही है कि दीन-ए-इलाही के मानने वाले की संख्या अत्यधिक कम थी किन्तु हमें यहभी ध्यान रखना चाहिए कि अकबर ने इसे फैलाने के लिए न किसी प्रकार का बल प्रयोग किया और न ही राज्य मशीनरी का प्रयोग किया। अकबर ने तो दीन-ए-इलाही के माध्यम से एक नवीन आचार संहिता देकर लोगो के मन मस्तिष्क पर से धर्म के प्रभाव को सीमित करना चाहा था।